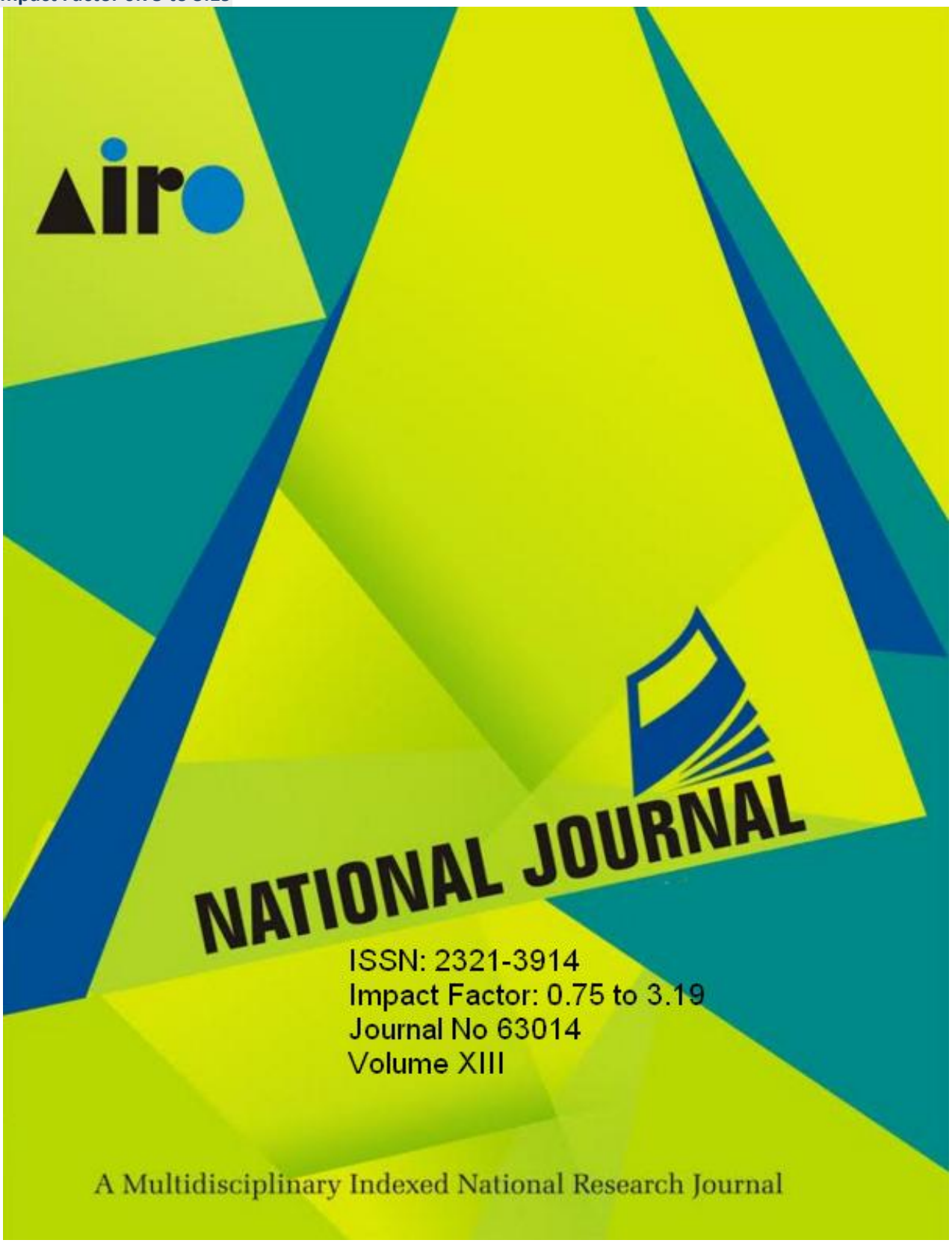
Airo
NATIONAL JOURNAL
ISSN: 2321-3914
Impact Factor: 0.75 to 3.19
Journal No 63014
Volume XIII
A Multidisciplinary Indexed National Research Journal

Airo National Research Journal

Volume XIII, ISSN: 2321-3914
January, 2018
Impact Factor 0.75 to 3.19

UGC Approval Number 63014

जनसंचार का हिन्दी के प्रचार–प्रसार में योगदान

डॉ रेखा रानी जूड

(सहायक प्रोफेसर) बाबू अनन्त राम कॉलेज ऑफ एजूकेशन, कौल (कैथल)

Declaration of Author: I hereby declare that the content of this research paper has been truly made by me including the title of the research paper/research article, and no serial sequence of any sentence has been copied through internet or any other source except references or some unavoidable essential or technical terms. In case of finding any patent or copy right content of any source or other author in my paper/article, I shall always be responsible for further clarification or any legal issues. For sole right content of different author or different source, which was unintentionally or intentionally used in this research paper shall immediately be removed from this journal and I shall be accountable for any further legal issues, and there will be no responsibility of Journal in any matter. If anyone has some issue related to the content of this research papers copied or plagiarism content he/she may contact on my above mentioned email ID.

जनसंचार के माध्यम से कोई संदेश एक जगह से दूसरी जगह पंहुचाया जाता है। हिन्दी के विकास में अनेक कवियों, लेखकों, संस्थाओं ने महत्वपूर्ण काम किया जिसमें साप्ताहिक पत्रिका 'उदन्त मार्तण्ड' को प्रथम श्रेय जाता है। हिन्दी के प्रचार में अनेक संस्थाओं ने महत्वपूर्ण कार्य किया है। सन् 1893 में स्थापित नागरी प्रचारिणी सभा, दक्षिण हिन्दी प्रचार सभा मद्रास 1918 एवं सरस्वती पत्रिका 1900 आदि अनेक संस्थाओं ने हिन्दी के प्रचार में योगदान दिया।

हिन्दी भारत की राजसभा, राष्ट्रभाषा तथा सम्पर्क भाषा है और दिन प्रतिदिन इस में निखार की नई लहर आ रही है।

जनसंचार माध्यमों के दो प्रमुख विभाजन किए जा सकते हैं – 1. मुद्रण माध्यम – समाचार पत्र और सामग्री 2. इलैक्ट्रॉनिक माध्यम। मुद्रण माध्यम में – समाचार पत्र और सामग्री। इलैक्ट्रॉनिक माध्यम – जिसमें आकाशवाणी दूरदर्शन, टेलीफोन या दूरसंचार, सिनेमा, विज्ञापन, सूचना प्रौद्योगिकी आदि आ जाते हैं।

दूरसंचार – टेलीफोन या दूरसंचार और तार सेवा का भी भाषा के संवर्धन पर काफी महत्व है। टेलीफोन की अपनी बोलचाल की भाषा है और लोग समय की बचत को दृष्टि में रखते हुए भाषा को ही सांकेतिक ढांचों में डाल देते हैं। कुछ ही शब्दों में ज्यादा परिणाम निकल आते हैं। दूरसंचार सेवाओं के साथ–साथ डाक सेवा की भी अपनी ही विशेषता है। जो प्राचीन काल से चली आ रही है और आप जनता की भाषा, उपयुक्त व सम्पन्न बनाने में योगदान दे रही है।

आकाशवाणी – ऐतिहासिक दृष्टि से इलैक्ट्रोनिक माध्यम आकाशवाणी का अपना महत्व है। भारत में 1927 में रेडियो का शुभारम्भ हुआ। रेडियो के माध्यम से कहानी , नाटक, रूपक, संगीत आदि श्रेणी के कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। हिन्दी भाषा का बहुमुखी विकास आकाशवाणी के जरिए होता रहता है भाषा के अनेक प्रकार के प्रयोग मुहावरे नई छटांए, दिन–प्रतिदिन प्रयुक्त होती है। हिन्दी भाषा को एक विशिष्ट और मानक स्वरूप देने में आकाशवाणी का महत्वपूर्ण योगदान है।

सिनेमा – दृश्य–माध्यमों में सिनेमा की जितनी महता है प्रायः उतनी और किसी में नहीं है। 19वीं सदी में भारत में सिनेमा का युग आरम्भ हुआ था। सन् 1913 में दादा साहब फाल्के ने हरिश्चन्द्र फिल्म बनाकर भारत को विशेष रूप से सिनेमा के सामने खडा कर दिया। सन् 1913 से 1930 तक भारतीय फिल्मों का मूक युग चलता रहा जिसमें लगभग 1200 फिल्में बनी।

फिल्में देखकर लोग अपनी भाषा को सम्पन्न बनाने की चेष्टा करते है। इस तरह भाषा को सूक्ष्म, सुदृढ, लचीले और परिणामकारी बनाने में फिल्मों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

दूरदर्शन – भारत में दूरदर्शन की शुरूआत 1959 में प्रायोगिक तौर पर दिल्ली में शुरू हुआ। लेकिन नियमित प्रसारण 1965 में शुरू हुआ। टेलीविजन सेवा का विस्तार 1972 में मुबंई में हुआ और 1975 में देश के सात शहरों में टेलीविजन सेवा उपलब्ध हो सकी थी। 1982 में भारत में रंगीन टी0वी0 शुरूआत हुई। अप्रैल 1982 में स्वदेश उपग्रह इनसैट 1–ए छोडे जाने से सम्पूर्ण देश दूरदर्शन प्रसारण तकनीकी से जुड गया, दिल्ली, कलकता, मद्रास बम्बई में दूरदर्शन का प्रसारण एक साथ हुआ। फिर 1983 में दूसरा उपग्रह 1–बी के छोडे जाने से दूरदर्शन प्रसारण और अधिक समृद्ध हुआ।

आजकल दूरदर्शन का प्रमुख चैनल डी0डी0 – 1 विभिन्न क्षमताओं के 1042 स्थल ट्रांसमीटरों के तंत्र के जरिए 871 से ज्यादा आबादी तक अपने कार्यक्रम पहुंचा रहा है। दूरदर्शन 21 चैनल के जरिए अपने कार्यक्रम प्रसारित करता है जिसमें पांच अखिल भारतीय चैनल हैं। 1992 फरवरी में स्टार समूह ने देशभर में अपने टी0वी0 चैनल पेश किए और आजकल सौ से ज्यादा उपग्रह टी0वी0 चैनल देशभर में काम कर रहें है।

स्टार, स्टार प्लस, जी, सोनी, एन0टी0एन0, बी0बी0सी0, आज तक, डिस्कवरी, सी0एन0एन0, एन0टी0वी0 इन निजी चैनलों द्वारा अनेक प्रकार के कार्यक्रम प्रसारित हो रहे है। हिन्दी भाषा के विकास में इनका महत्वपूर्ण योगदान है।

विज्ञापन– आज का युग विज्ञापन का युग है। 'स्वांत सुखाय' सूत्र से कम ही लोग सम्बद्ध है। बडे से बडे साहित्यकार, कलाकार, सन्त, भक्तजन, समाज सुधारक तक विज्ञापन में विश्वास करने लगे है। रंगमंच और फिल्म से जुडे तथा किसी भी उद्योग–उद्यम से जुडे लोग अधिकतर विज्ञापन के बल पर ही चलते है।

आज का समय विज्ञापन का समय है। भारत में 1905 में सर्वप्रथम विज्ञापन की एक संस्था वी दताराम एण्ड कम्पनी नाम से स्थापित हुई। इसके बाद उतोरत भारत में अनेक कम्पनियां खुल गई।

हिन्दी भाषा के विकास की दृष्टि से विज्ञापनों की महता इसलिए भी है क्योंकि विज्ञापनों में उद्‌बोधनों के द्वारा समाज का हर वर्ग प्रभावित होता है। विज्ञापनों की भाषा हिन्दी होने से हिन्दी का प्रचार हो रहा है।

सूचना प्रौद्योगिकी– आज का युग सूचना का बीजमंत्र है। हिन्दी में कई तरह के सूचना सम्पन्न साफटवेयर बन गए हैं यहां सूचना से तात्पर्य उस कथ्य या सामग्री से है जो हमें इंटरनेट या वैब के माध्यम से प्राप्त होती है। मोटे रूप से इंटरनेट से उपलब्ध सूचनाएं दो प्रकार की होती है – सामान्य सूचना और ज्ञानात्मक सूचना। सामान्य सूचनाएं प्रायः तत्कालीन महत्व की होती है। जैसे व्यापारिक, वाणिज्यिक, व्यावसायिक, राजनीतिक, सामाजिक और व्यक्तिगत सूचनांए।

ज्ञानात्मक सूचनाओं का संबंध ज्ञान–विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों या अनुशासनों से होता है।

इंटरनेट, ई–मेल जैसी सुविधाएं हिन्दी जैसी देशीय भाषाओं में भी उपलब्ध है। आज हिन्दी की अनेक वेब साईटे हैं:–

1. www.webdunia.com हिन्दी का पोर्टल, साथ ही हिन्दी में ई–मेल, चैटिंग आदि की सुविधा भी है।

2. www.wyjavaserver.com/hindi इस साईट का नाम चिट्ठा विश्व है। यहां पर हिन्दी के सभी ब्लोगों की नवीन प्रविष्टियों को पढा जा सकता है।
3. e.caliber.com/iha/main.htm यह अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी संस्था की साईट है। इस साईट पर हिन्दी शिक्षा से जुडी काफी जानकारियां उपलब्ध है।

इंटरनेट, ई–मेल जैसी सुविधाओं से हिन्दी भाषा एक अलग ही वैज्ञानिक मोड ले रही है।

आजकल कार्यालयों में काम करने के लिए हिन्दी में माइक्रोसाफट ऑफिस जैसा कार्यक्रम उपलब्ध हुआ है।

हिन्दी के कम्प्यूटरीकरण करने की दिशा में भाषा के साथ काफी मेल–जोल भी करना पडता है, जिसका प्रभाव भाषा के विकास में लगातार दृष्टिगत हो सकता है।

अंत में हम कह सकते हैं कि यदि बदलते राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राष्ट्रीय तथा अंतराष्ट्रीय परिवेश को ध्यान में रखकर राजभाषा हिन्दी के प्रचार, प्रसार, प्रयोग और उसकी सम्यक प्रतिष्ठा के लिए सतत प्रयास किया जाता रहेगा।

संदर्भ–सूची

1. डॉ. सुजाता शर्मा, जी.पी. वर्मा, जनसंचार, जनसम्पर्क एवं विज्ञान, ज्ञानोदय प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 2010, पृ. 23
2. डॉ. पंडित बन्ने, हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य, कानपुर, अमन प्रकाशन, दूसरा संस्करण, 2012, पृ. 66–67
3. डॉ. सुजाता शर्मा, जी.पी. वर्मा, जनसंचार, जनसम्पर्क एवं विज्ञान, ज्ञानोदय प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 2010, पृ. 53
4. डॉ. पंडित बन्ने, हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य, कानपुर, अमन प्रकाशन, दूसरा संस्करण, 2012, पृ. 68–69